RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

Where dream Chisels into reality

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • January 2024 • PAGES 4 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

Achieving a Net Zero Economy: A Pathway to Sustainability

Ms. Amarpreet Kaur

Climate change poses urgent threats, making a "net-zero economy" essential. A net-zero economy ensures that the greenhouse gases we emit match those we remove or counteract, preventing further global warming. This goal entails significant changes in our economy, energy systems, and consumption. We'll examine the core principles and obstacles involved in creating a net-zero economy.

Transitioning to Renewable Energy

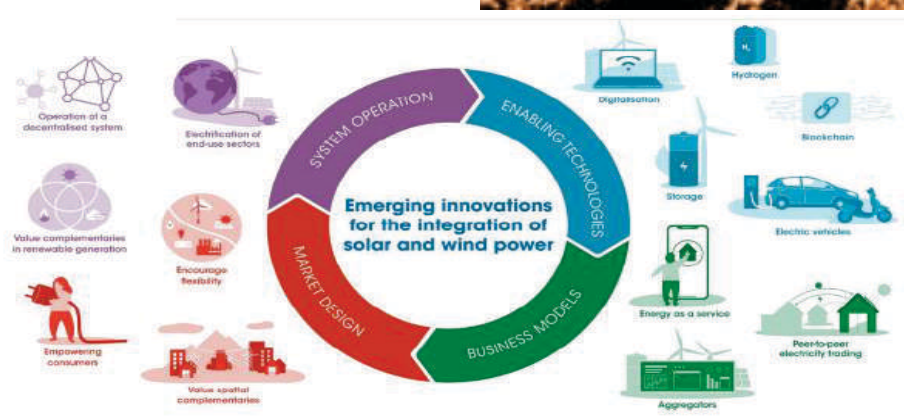

The shift to a net-zero economy relies heavily on replacing fossil fuels with renewable energy sources. Burning fossil fuels, like coal, oil, and gas, significantly contributes to greenhouse gas emissions. To reduce carbon emissions, embracing sustainable alternatives like solar, wind, hydro, and geothermal energy is essential. Governments, companies, and individuals should invest in and support developing and implementing renewable energy technologies to facilitate the required system-wide changes.

Energy Efficiency and Conservation

In addition to transitioning to cleaner energy sources, improving energy efficiency and promoting conservation are vital components of achieving a net-zero economy. This involves optimizing energy use in industrial processes, transportation, buildings, and infrastructure. Innovations in energy-efficient technologies, smart grids, and sustainable urban planning can significantly contribute to reducing overall energy consumption and minimizing environmental impact.

Carbon Capture and Removal Technologies

While immediate elimination of all greenhouse gas emissions is difficult, carbon capture and removal technologies are essential for reaching net-zero objectives. These technologies prevent carbon dioxide from industrial and energy facilities from reaching the atmosphere. Additionally, boosting natural carbon reservoirs like forests and oceans can help absorb and hold carbon, aiding in achieving a net-zero balance.

Green Finance and Sustainable Investments

To achieve a net-zero emissions economy, substantial funding is needed. To do this, governments, businesses, and financial institutions must focus their investments on sustainability. Green finance programs and sustainable investments can provide the necessary funding for projects like renewable energy, energy-efficient technologies, and other initiatives that promote environmental well-being. By prioritizing responsible and sustainable financial practices, we can drive the necessary changes in various sectors to create a more sustainable future.

Policy and Regulation

Governments have a central role in guiding the shift towards a zero-emissions future. They set national targets for emissions reduction, encourage the use of clean energy sources, and deter activities with high carbon footprints. Collaboration between nations is vital in tackling this global issue. The Paris Agreement is an example of such collaboration, providing a framework for countries to work together towards a common goal.

Challenges and Opportunities

Navigating the concept of a net-zero economy brings forth both challenges and opportunities. The difficulties stem from the necessity to transition communities reliant on fossil fuels, tackle environmental concerns, and manage economic shifts. Nevertheless, this shift also opens doors for job creation, innovation, and economic expansion. Strategic planning and execution become pivotal in overcoming challenges and capitalizing on these prospects.

Tackling today's challenges demands an innovative approach. If we aspire for prosperity beyond mere financial considerations, industries should be acknowledged not only for their economic metrics but also for their ability to generate wealth while minimizing negative impacts.

Yet, achieving significant progress toward a net-zero economy demands a broader perspective—a mindset that takes into account entire systems. This is why ACCIONA has partnered with the World Economic Forum's Electricity Industry Action Group to unveil a novel system value framework.

This framework adopts a more personable standpoint, evaluating the economic, environmental, social, and technical ramifications of potential energy solutions in a more holistic manner across diverse markets. The objective is to shift political and commercial attention away from focusing solely on costs and toward recognizing overall value, expediting the transition to a net-zero economy.

आपातकाल में पत्रकारिता

डॉ. (प्रो.) अरूण भगत
सदस्य, बिहार लोक सेवा आयोग

> **यूं तो सन् 1975 से पहले भी देश में आपातकाल लगा था। सन् 1962 में साम्यवादी चीन के आक्रमण के समय और फिर उसके नौ साल बाद सन् 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय भी देश में आपातकाल की घोषणा करनी पड़ी थी। मगर उस वक्त प्रेस की आवाज दबाने की कोशिश नहीं की गयी थी। लेकिन सन् 75 में जो हुआ, लोकतंत्र में उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।**

सन् 1975 के आपातकाल में प्रेस की आजादी पर लगाए गए प्रतिबंधों को भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में एक काला अध्याय माना जाता है। इस दौरान सरकार ने पत्रकारिता की आवाज पूरी तरह दबाने की कोशिश की। लेकिन आपातकाल के दौरान भी निष्पक्ष और निभीक पत्रकारिता जिन्दा रही और लोकतंत्र के प्रहरी की अपनी भूमिका निभाने में सफल रही। लोकतंत्र में प्रेस की स्वतंत्रता छीनने की कोशिशों को जनता ने देखा, समझा और इसका जवाब भी दिया। इसकी कीमत इंदिरा गांधी को अपनी सत्ता खोकर चुकानी पड़ी। आपातकाल के बाद हुए चुनावों में कांग्रेस बुरी तरह पराजित हुई और इंदिरा गांधी सत्ता से बाहर हो गयीं।

वर्ष 1974 तक पत्रकारिता के माध्यम से सत्ता और सरकार की सर्वत्र आलोचना हो रही थी। देश में भ्रष्टाचार, शैक्षणिक अराजकता, महंगाई और कुव्यवस्था के विरोध में समाचार-पत्रों में बढ़-चढ़ कर लिखा जा रहा था। गुजरात और बिहार में छात्र-आंदोलन ने जन-आंदोलन का रूप ले लिया था जिसके नेतृत्व का भार लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने अपने कंधों पर ले लिया। उन्होंने पूरे देश में संपूर्ण क्रांति आंदोलन का आह्वान कर दिया था।

यूं तो सन् 1975 से पहले भी देश में आपातकाल लगा था। सन् 1962 में साम्यवादी चीन के आक्रमण के समय और फिर उसके नौ साल बाद सन् 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय भी देश में आपातकाल की घोषणा करनी पड़ी थी। मगर उस वक्त प्रेस की आवाज दबाने की कोशिश नहीं की गयी थी। लेकिन सन् 75 में जो हुआ, लोकतंत्र में उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी उस वक्त सत्ता के सिंहासन पर विराजमान थी। देश नीतियों पर नहीं, उनकी मर्जी पर ज्यादा चलता था। सत्ता की हनक उनके दिमाग पर सवार थी। ऐसे में राजनारायण बनाम इंदिरा गांधी मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने इंदिरा गांधी के चुनाव को रद्द घोषित कर दिया। 12 जून 1975 का दिन ऐतिहासिक रहा। उस दिन एक प्रधानमंत्री के खिलाफ हाईकोर्ट का फैसला आया। कोर्ट ने इंदिरा गांधी को चुनावों में धांधली का दोषी पाया। अदालत ने उनके खिलाफ फैसला सुनाते हुए उनका चुनाव रद्द कर दिया। जस्टिस जगमोहन लाल सिन्हा ने इंदिरा गांधी को अगले छह सालों तक लोकसभा या विधानसभा का चुनाव लड़ने पर भी रोक लगा थी। इससे इंदिरा गांधी की संसद की सदस्यता खतरे में पड़ गयी। साथ ही उनके चुनाव लड़ने पर भी रोक लग गयी थी।

फैसले से तिलमिलायी इंदिरा गांधी इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट गयीं। 24 जून को सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर स्थगन आदेश तो दे दिया, लेकिन ये पूर्ण नहीं आंशिक स्थगन आदेश था। सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि इंदिरा गांधी संसद की कार्यवाही में तो हिस्सा ले सकती हैं, लेकिन वोट नहीं डाल सकती।

इसके बाद विपक्ष इंदिरा गांधी पर और ज्यादा हमलावर हो गया। इंदिरा गांधी के खिलाफ पूरे देश में माहौल बन रहा था। प्रेस भी प्रधानमंत्री पर लगातार प्रहार कर रहा था। ऐसे में इंदिरा गांधी को अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए था। लेकिन सत्ता के मद में चूर इंदिरा गांधी ने अपनी कुर्सी बचाने के लिए एक ऐसा कदम उठाया, जो भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में कलंक माना जाता है। 24-25 जून की आधी रात को देश में आपातकाल की घोषणा कर दी गयी। पूरा लोकतंत्र जंजीरों में जकड़ दिया गया।

इस आपातकाल में सबसे ज्यादा प्रहार प्रेस की आजादी पर ही हुआ। 26 जून को प्रेस सेंसरशिप लागू कर दी गयी। इस प्री-सेंसरशिप के बहाने पत्रकारिता की आवाज घोंट देने का कुत्सित प्रयास किया गया। अखबारों के दफ्तरों में अधिकारी नियुक्त कर दिए गए। बिना सेंसर अधिकारी की अनुमति के अखबारों में राजनीतिक खबरों को छापने पर रोक लगा दी गयी।

सेंसरशिप का विरोध जताने के लिए कुछ अखबारों ने संपादकीय की जगह खाली छोड़ दी। ये अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छीनने का प्रतीकात्मक विरोध था। कुछ अखबारों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्ष में महापुरुषों की उक्तियां छापकर अपना विरोध जताया। एक अखबार ने तो शोक संदेश के कॉलम में छापा - "लोकतंत्र की 26 जून, 1975 को मृत्यु हो गयी।"

प्रेस की स्वतंत्रता को पूरी तरह दबाने की कोशिश आपातकाल के दौरान की गयी। 8 दिसंबर, 1975 को राष्ट्रपति ने संविधान के अनुच्छेद 123 के तहत अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए तीन अध्यादेश जारी किए। इनमें आक्षेपणीय प्रकाशन निवारण अध्यादेश, संसदीय कार्यवाही (प्रकाशन संरक्षण) अधिनियम निरस्त अध्यादेश और प्रेस परिषद अधिनियम अध्यादेश शामिल था। प्रेस सेंसरशिप और इन तीनों अध्यादेशों के माध्यम से सरकार ने प्रेस की आजादी को खत्म करने की ही कोशिश की थी। दरअसल सरकार के मन में ये भय था कि प्रेस उसकी छवि जनता के बीच खराब कर सकता था। इसलिए प्रेस पर लगाम लगाने की हर संभव कोशिश की गयी थी। हाल यहां तक बुरा हुआ कि तत्कालीन सूचना और प्रसारण मंत्री विद्याचरण शुक्ल ने 28 जून,1975 को संपादकों की एक बैठक बुलाकर उन्हें चेतावनी दी थी कि वे संपादकीय का स्थान रिक्त न छोड़े और उनमें कुछ ऐसा न लिखे जो सरकार विरोधी हो। यहां तक की आपातकाल के विरोध में लिखने की भी मनाही कर दी गयी।

प्रसिद्ध पत्रकार कुलदीप नैयर सहित लगभग 250 पत्रकारों को पूरे आपातकाल के दौरान गिरफ्तार कर लिया गया। 50 से ज्यादा पत्रकारों, कैमरामैन की सरकारी मान्यता रद कर दी गई। प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया भंग कर दिया गया। इतना ही नहीं आयकर, बिजली, नगरपालिका के बकाये की आड़ में अखबारों पर छापे डाले गए। बैंकों को कर्ज देने से रोका गया।

भारत में दूरदर्शन और रेडियो तो पहले से ही सरकारी नियंत्रण में थे। प्रेस सेंसरशिप और तीनों अध्यादेशों के बाद देशभर की पत्र-पत्रिकाओं पर अंकुश लगाने के तरीके जनविरोधी सरकार ने ढूंढ लिए थे। ऐसे में सरकार के पक्ष की खबरें तो लोगों तक पहुंच जाती थी। लेकिन सरकार विरोधी खबरें लोगों तक नहीं पहुंच पा रही थी। ज्यादातर अखबारों में सरकारी विज्ञप्तियों को सहारे ही खबरों को छापने का विकल्प रह गया था। एक पक्षीय खबरों के ही छपने के कारण पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े होने लगे थे। लेकिन एकतरफा संचार का खामियाजा सरकार को भी भुगतना पड़ा। सरकार के विरोध की खबरें न छपने के कारण सरकार फील-गुड फैक्टर की गलतफहमी में रह गयी और चुनाव होते ही जनता ने उसे जमीन पर औंधे मुंह गिरा दिया।

आपातकाल में सेंसरशिप के खौफ के कारण अनेक पत्र-पत्रिकाओं का असामयिक निधन हो गया। 'इंडियन एक्सप्रेस' और 'स्टेटसमैन' को परेशान करने के अनेक मामले सामने आए। आपातकाल के दौरान 3801 समाचार पत्रों के डिक्लेरेशन जब्त कर लिए गए। 290 अखबारों के विज्ञापन बंद कर दिए गए।

जे.पी. आंदोलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की व्यापक भागीदारी थी। इसलिए संघ से जुड़ी और उसकी विचारधारा का अनुसरण और अनुपालन करने वाली पत्र-पत्रिकाओं पर सबसे ज्यादा असर हुआ। पांचजन्य, आर्गेनाइजर, मदरलैंड (दैनिक), तरुण भारत, विवेक विक्रम, राष्ट्रधर्म, युगधर्म इत्यादि को सील कर दिया गया था। इसके विपरीत संघ परिवार की ओर से बिहार में लोकवाणी, छात्रशक्ति, भारती इत्यादि पत्र भूमिगत तौर पर छप रहे थे तो हरियाणा में 'दर्पण' ने धूम मचा रखी थी।'

सरकार के इस दमन-चक्र के बीच भी पत्रकारों ने अपनी हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने आपातकाल के खिलाफ संघर्ष किया। 3 जुलाई, 1975 को दिल्ली के प्रेस क्लब में लगभग 100 पत्रकारों ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए प्रेस पर सेंसर की निन्दा की और इसे हटाए जाने की मांग की।

आपातकाल के दौरान एक ओर जहां सत्ता और सरकार की चापलूसी करने वाले पत्रकार थे, वहीं दूसरी ओर प्रेस की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले पत्रकारों की भी कमी नहीं थी। वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर, देवेंद्र स्वरूप, श्याम खोसला, सूर्यकांत बाली, के.आर. मलकानी जैसे पत्रकारों ने तो जेल की यातनाएं भी भोगीं। इसके विपरीत ऐसे पत्रकारों की भी कमी नहीं थी, जिन्होंने सेंसरशिप को स्वीकार किया। यही स्थिति साहित्यकारों के साथ भी थी।

पत्र-पत्रिकाओं पर सेंसरशिप लगी तो पत्रकारिता के वास्तविक नायकों ने दूसरा रास्ता अपनाया। भूमिगत बुलेटिनों ने स्वतंत्र पत्रकारिता की कमी पूरी करने की कोशिश की। सरकार की नजरों से दूर, चोरी-छिपे ये पत्र छापे जाते और लोगों तक पहुंचाए जाते। इस कारण लोगों तक सही खबरें पहुंच पाती।

आपातकाल के दौरान भूमिगत रुप से दर्जनों समाचार-बुलेटिनों का प्रकाशन शुरु हो गया था। प्रत्यक्ष रुप से प्रकाशित और वितरित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं पर सेंसरशिप की लगाम कसने के कारण भूमिगत संचार-व्यवस्था समानांतर रुप से खड़ी हो गयी थी। जनता के बीच सरकार ने सूचना-संप्रेषण प्रक्रिया को छिन्न-भिन्न कर दिया था। एकतरफा संवाद ही संप्रेषित हो रहे थे। ऐसे में जनसरोकारों से जुड़े राष्ट्र के प्रति समर्पित और हिम्मती पत्रकारों ने गुप्त रुप से नियमित समाचार-बुलेटिनों का प्रकाशन किया। इसके साथ ही पूरे देश में अलग-अलग स्थानों से विभिन्न प्रकार के हैंडबिल, पर्चे, बुकलेट, पैंफलेट इत्यादि निकालकर पुलिसिया दमन का कच्चा चिट्ठा खोल दिया गया।

भूमिगत प्रचार तंत्र की उपलब्धि के संबंध में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने लिखा है कि सेंसर और प्रचार-तंत्र के एकाधिकार से श्रीमती गांधी जनता को विपक्ष से पूरी तरह काट देना चाहती थीं। लेकिन हुआ इसका ठीक उलटा। सरकार के प्रचार तंत्र की विश्वसनीयता खत्म हो गयी। वहीं भूमिगत साहित्य ने विपक्ष को जनता से जोड़े रखा।

भूमिगत प्रचारतंत्र का एक विस्तार विदेशों में था। इसी कारण सरकार का तानाशाही चरित्र विदेशों में छिप नहीं सका। विदेशों में रहने वाले लाखों भारतीयों, बुद्धिजीवियों और नेताओं ने तानाशाही के विरुद्ध भारतीय जनता के संघर्ष का समर्थन किया। इस प्रकार आपातकाल में यदि प्रत्यक्ष तौर से निकलने वाली पत्र पत्रिकाओं पर सरकार ने अंकुश लगा दिया तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा समाजवादी पृष्ठभूमि से जुड़े कुछ पत्रकारों ने गुप्त रूप से पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू कर दिया था। इसके अतिरिक्त आपातकाल विरोधी साहित्य के रूप में सरकार के अत्याचारों से अवगत कराने के लिए कुछ बुकलेट, पैंफलेट, हैंडबिल, पर्चे इत्यादि बड़ी संख्या में निकलने लगे थे। भय और आतंक के उस माहौल में अंधेरे के विरुद्ध लड़ाई में ऐसी गुप्त पत्र पत्रिकाएं प्रकाश स्तंभ का काम करती थी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण, अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी जैसे नेताओं के संदेश भी इन पत्रकों में छपते थे, जो त्रासदी के उस कालखंड में कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते थे और आंदोलनकारी परिवारों के लिए संबल का कार्य करते थे। कुल मिलाकर आपातकाल की भूमिगत पत्रकारिता ने एक समानांतर संचार व्यवस्था खड़ी कर दी थी।

मेहमान का कोना

ज्योतिष के पितामह : वराहमिहिर

अमित शर्मा

वराहमिहिर न सिर्फ ज्योतिष शास्त्र के पारंगत थे बल्कि गणितज्ञ और खगोलशास्त्री भी थे। दरअसल प्राचीन काल में ज्योतिष का ज्ञान गणित और खगोल विज्ञान के ज्ञान के बिना अधूरा माना जाता था। एक अच्छा ज्योतिष शास्त्री वहीं हो सकता था जिसे खगोलशास्त्र और गणित का भी संपूर्ण ज्ञान हो। वराहमिहिर को प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट का शिष्य माना जाता है। आर्यभट्ट की ही तरह वराहमिहिर ने भी पृथ्वी को गोल माना था। साथ ही उन्होंने गुरूत्वाकर्षण शक्ति के बारे में भी जानकारी देने का प्रयास किया। वराहमिहिर एक असाधारण ज्योतिषी थे। वे अपनी सटीक भविष्यवाणियों के लिए प्रसिद्ध थे।

भारतीय ज्योतिष वैदिक परंपरा की देन माना जाता है। मनीषियों ने ज्योतिष शास्त्र को वेदों की आंख माना है। प्राचीन काल में कई ऐसे सिद्धजन हुए जिन्होंने ज्योतिष शास्त्र के क्षेत्र में अनूठा योगदान दिया। भारतीय ज्ञान प्राचीन काल में श्रुति और स्मृति पर आधारित था। यानि सारा ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सुनकर और स्मृति के आधार पर दिया जाता था। उस दौरान कई बड़े ऋषि-मनीषी हुए जिन्होंने वैदिक ज्योतिष के कई सिद्धांत प्रतिपादित किए। परंतु लिखित रुप में इस ज्ञान की प्राप्ति हमें नहीं हो पाती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में लिखित ज्ञान की प्राप्ति हमें बहुत बाद में मिलती है।

ज्योतिष शास्त्र के आरंभिक लिखित कार्यो में सबसे प्रतिष्ठित नाम है वराहमिहिर(वर:मिहिर) का। उन्हें भारतीय ज्योतिष का पितामह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। फलित ज्योतिष में उनका कार्य आज भी ज्योतिषियों का मार्गदर्शन करता है। फलित ज्योतिष ज्योतिषशास्त्र का वह हिस्सा है जिसमें ग्रह-नक्षत्रों की गति और स्थिति के आधार पर भविष्य की घटनाओं की जानकारी लेने का प्रयास किया जाता है। उनकी पुस्तकें बृहत्जातिका, बृहत-संहिता, योगयात्रा और पंचसिद्धांतिका ज्योतिष शास्त्र का अनुपम ज्ञान प्रदान करती हैं। पंचसिद्धांतिका में उन्होंने ही सर्वप्रथम अयनांश का मान 50.32 सेकेंड के बराबर बताया। माना जाता है कि दिल्ली में कुतुब मीनार के निकट स्थित लौह स्तंभ का निर्माण उनकी वैज्ञानिक क्षमता का परिचायक है। सदियों से हवा-पानी सब झेलने के बाद भी लौह स्तंभ में आजतक जंग नहीं लगी है। कई इतिहासकार मानते हैं कि इसका निर्माण गुप्त काल में राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय ने करवाया था। वराहमिहिर उनके ही दरबार के नवरत्नों में शामिल थे। वराहमिहिर का सबसे बड़ा योगदान ये माना जाएगा कि उन्होंने गणित, खगोल विज्ञान और ज्योतिष जैसे जटिल विषयों को लोगों के हित से जोड़ने का कार्य किया। अपने ज्ञान के अथाह सागर की सरस प्रस्तुति से उन्होंने लोगों में जटिल विषयों को भी लोकप्रिय बना दिया। उनका वेदों का ज्ञान असाधारण था। हमारी वैदिक परंपरा में ज्ञान को जनहित से जोड़ कर ही देखा गया है। वराहमिहिर ने इसी वैदिक परंपरा का पालन किया था।

वराहमिहिर न सिर्फ ज्योतिष शास्त्र के पारंगत थे बल्कि गणितज्ञ और खगोलशास्त्री भी थे। दरअसल प्राचीन काल में ज्योतिष का ज्ञान गणित और खगोल विज्ञान के ज्ञान के बिना अधूरा माना जाता था। एक अच्छा ज्योतिष शास्त्री वहीं हो सकता था जिसे खगोलशास्त्र और गणित का भी संपूर्ण ज्ञान हो। वराहमिहिर को प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट का शिष्य माना जाता है। आर्यभट्ट की ही तरह वराहमिहिर ने भी पृथ्वी को गोल माना था। साथ ही उन्होंने गुरूत्वाकर्षण शक्ति के बारे में भी जानकारी देने का प्रयास किया। वराहमिहिर एक असाधारण ज्योतिषी थे। वे अपनी सटीक भविष्यवाणियों के लिए प्रसिद्ध थे।

वराहमिहिर का जन्म 505 ई. में माना जाता है। कुछ ग्रंथों में इनका जन्म 499 ई. में बताया गया है। उनका जन्म उज्जयिनी (उज्जैन) के कापित्थ ग्राम में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का आरंभिक ज्ञान अपने पिता आदित्यदास से पाया था। ऐसा कहा जाता है कि उनके पिता ने सूर्यदेव की कठिन उपासना की थी जिसके बाद उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई थी। इसीलिए उनके पिता ने उनका नाम मिहिर रखा। मिहिर का अर्थ होता है - सूर्य। बाद में वराह उपाधि उन्हें राजा विक्रमादित्य से प्राप्त हुई। इसके बाद उन्हें वराहमिहिर कहा जाने लगा।

उन्होंने लघुजातक, बृहत्जातक, बृहत-संहिता, और पंचसिद्धांतिका जैसे ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की। लघुजातक और बृहत्-जातक को फलित ज्योतिष का अनुपम ग्रंथ माना जाता है। इसे हमेशा से ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन के लिए प्रेरणा स्रोत माना जाता है। गणित ज्योतिष की दृष्टि से पंचसिद्धांतिका का भी बहुत महत्व है। इस ग्रंथ में उन्होंने उस काल तक के सभी सिद्धांतों का समावेश किया है।

वे राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे। इतिहास में अकबर के नौ रत्न प्रसिद्ध हैं। बीरबल, तानसेन, अबुल फजल और टोडरमल जैसे अकबर के दरबार की नौ हस्तियों के नाम सबको पता हैं। लेकिन इससे बहुत पहले गुप्त काल में चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों की विशिष्टता भी बढ़-चढ़ कर थी। सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों में वराहमिहिर के साथ महाकवि कालीदास, धन्वंतरि, वेताल भट्ट जैसे बड़े-बड़े नाम शामिल थे। कला, संस्कृति, विज्ञान, गणित जैसे सभी क्षेत्रों के सबसे उच्च कोटि के विद्वान सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय के दरबार में विशिष्ट स्थान प्राप्त करते थे। इसी कारण से गुप्त काल को भारत के इतिहास का स्वर्ण काल कहा जाता है।

वराहमिहिर को आर्यभट्ट का शिष्य माना जाता है। आर्यभट्ट भारत के सबसे बड़े गणितज्ञ थे। शून्य की खोज उन्होंने ही की थी। वराहमिहिर ने आर्यभट्ट के कार्य को भी आगे बढ़ाया। उनका गणितीय ज्ञान भी अद्वितीय था।

वराहमिहिर ने अपने समय के प्रचलित सभी महत्वपूर्ण ज्योतिषीय सिद्धांतों का एकीकरण किया। इसे ज्योतिषीय ज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। उनकी पंचसिद्धांतिका में पांच सिद्धांतों का वर्णन हैं। वराहमिहिर ने इन पूर्वप्रचलित सिद्धांतों को पुस्तक के रुप में लोगों के लिए उपलब्ध कराया। साथ ही उन्होंने इसमें अपने ज्ञान को भी समाहित किया है। फलित ज्योतिष के उनके तीन ग्रंथ लघुजातक, बृहत्जातक और बृहतसंहिता अति महत्वपूर्ण माने जाते हैं। वराहमिहिर ने अंकगणित, त्रिकोणमिति के साथ-साथ पर्यावरण विज्ञान, जल विज्ञान और भू-विज्ञान के विषय में कई अर्थपूर्ण जानकारियां दी हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में उनका नाम सदा अग्रणी श्रेणी में रहेगा।

हौसले की मिसाल

भानु प्रताप सिंह

> हौसले बुलंद हों,
> तो जीत की तहरीर क्या।
> जब तक हार न हो सामने,
> तो ज़िन्दगी की तस्वीर क्या।।

भारत को विश्व जगतगुरु की संज्ञा देता है। प्राचीन काल से ही हमारा देश पूरी दुनिया को राह दिखाता आया है। आज भी यहां के लोग अपने हौंसलों से नयी मिसाल कायम कर रहे हैं। कभी दशरथ मांझी ने थकान और धैर्य की दीवार तोड़ी तो कभी अरुणिमा सिन्हा ने बिना पैरों के पर्वत पार कर दिखाया। इसी कड़ी में एक और नौजवान का नाम आता है जिसने भारत को विश्वगुरु होने का दर्जा दिलाया। उसने साबित कर दिखाया कि जो दुनिया में कोई नही कर सकता वह भारत का नौजवान हंसते-हंसते कर दिखाता है।

ऐसे हैं भारत के स्वर्ग-कश्मीर के अनंत प्रतिभाशाली नौजवान आमिर हुसैन।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि आमिर हुसैन के दोनों हाथ कंधे से ही कटे हुए हैं। इसके बावजूद वह अच्छे क्रिकेटर हैं। वह बिना हाथों के बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में ही निपुण हैं। हालाँकि आमिर इस मुकाम पर हंसते-हंसते नहीं पहुंचे। उनकी इस कामयाबी में उनके हाथों ने भले ही साथ नही दिया लेकिन उनके हौसले, लगन और अपार मेहनत ने उनका हाथ कभी नहीं छोड़ा। वह क्रिकेट में बल्लेबाजी गर्दन से और गेंदबाजी पैर से करते हैं।

34 वर्षीय आमिर हुसैन कश्मीर के अनंतनाग जिले के निवासी हैं। बचपन में उनके दोनों हाथ आरा मशीन (लकड़ी काटने की मशीन) से एक हादसे में कट गए। बचपन में उनका सपना था कि वह एक अच्छे क्रिकेटर बने। लेकिन हादसा होने के बाद उनका सपना पूरा होना मुश्किल था। लेकिन ये किसी ने सच कहा है कि मुश्किल में अगर कोई साथी है तो वह है साहस यानी हौसला। उन्होंने अपना हौसला नहीं खोया, लगभग तीन साल अस्पताल में गुजारने के बाद जब वह घर वापस आए, तो उन्होंने बिना हाथों के ही क्रिकेट खेलने की नाकाम कोशिश जारी कर दी। कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। आखिरकार, आमिर की कोशिश भी कामयाब हुई। साल 2013 में उन्हें जम्मू और कश्मीर की पैरा क्रिकेट टीम में चुन लिया गया। आमिर हुसैन अभी भी जम्मू-कश्मीर की पैरा-क्रिकेट टीम में शानदार प्रदर्शन करते अक्सर नजर आते हैं। आमिर हुसैन ने सच में हौसले की मिसाल कायम की है।

Chakras and Their Significance in One's Life

Radhika Kataria

Renowned celebrities such as Diljit Dosanjh, Taapsee Pannu and many others have openly embraced the intriguing practice of chakra healing, sparking curiosity and interest among their followers.

Chakra, a term derived from Sanskrit meaning "wheel," unveils a captivating realm of ancient Hindu philosophy. According to this profound belief system, each individual is said to possess a sequence of seven chakras, akin to vibrant energy intricately woven throughout the body. Beginning at the foundation of the spine and ascending to the crown of the head, these mystical points are thought to intricately correspond with specific organs, pulsating with potential and significance.In the Vedic chakra system, there's this idea of kundalini, which is like a sleeping energy resting at the bottom of our spine. The Vedas talk about different things we can do, like yoga, meditation, and repeating certain words, to wake up this energy. When it wakes up, it moves up through the chakras, these energy points in our body, until it reaches the very top of our head. This journey can bring about a really deep spiritual awakening.

Each of these seven main chakras has a corresponding number, name, color, specific area of the spine from the sacrum to the crown of the head, and health focus.

No.1, The Root Chakra (Muladhara), located at the base of the spine, is associated with stability and survival instincts, represented by the color red. Moving up the spine,

No.2, the Sacral Chakra (Swadhistana), situated in the lower abdomen, governs creativity, emotions, and relationships, symbolized by the color orange.

No.3, The Solar Plexus Chakra (Manipura), found in the upper abdomen, influences personal power and self-esteem, depicted in yellow. At the center of the chest lies the Heart Chakra (Anahata)

No.4 responsible for love, compassion, and emotional balance, portrayed by the color green.

Progressing to the throat area,

No.5, the Throat Chakra (Vishuddha) governs communication and self-expression, represented by the color blue. Between the eyebrows rests the Third Eye Chakra (Ajna)

No.6, associated with intuition and insight, symbolized by indigo. Finally, at the crown of the head,

No.7, the Crown Chakra (Sahasrara) signifies spiritual connection and higher consciousness, depicted in violet or white. Understanding the unique attributes of each chakra allows individuals to focus on specific areas of healing and self-awareness, promoting balance and harmony within the body and mind.

The Vedic chakra system serves as a profound and holistic roadmap for personal growth, spiritual awakening, and self-realization. By embracing the ancient wisdom enshrined in these sacred texts, individuals can embark on a transformative journey of self-discovery, unlocking their full potential and achieving a state of profound inner peace, harmony, and enlightenment.

RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Amit Sharma responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.
Email :
youngster@tecnia.in